

( अहिल्या स्तुति )

जै हो जै हो जै हो तेरी जग़ जीवन दशरथ राज दुलारे ।

है महिमा अपरंपार तेरी रघुनाथ प्यारे ॥

अगुण सगुण से पार पुरुषोत्तम तो को वन्दनु मेरो

जन्म जन्म हो रहूं नाथ तेरे चरण कमल को चरो

भक्तनि के सुखदाई स्वामी संतनि जीय जियारे ॥

पुरुष पुरातन हो पै तुमको कबहूं जरा न व्यापी

बिनु कारण कृपा करते हो पुण्यी हो या पापी

कोई नही चाह है तुम हीं सबके हो रखवारे ॥

दुख की छाया न छुए तुमको पै दीननि प्रति पाले

सब के उर पै दूरि सबनि ते अतुल तोलने वाले

सब के कारण बीज हो तुम ही सिरजण हारे ॥

हो तुम ही अजन्मा नैन अगोचर अगम निगम असगाए

पै भक्ति भूमि सुर धर्म रक्षा हित कितने ही रूप धराए

हो तो इच्छा रहित पै सब की आश पूर्ण करने हारे ॥

सब में सम पै भक्तनि के हित दुष्ट दमन हो करते

तेरी यथार्थता जानन को कोई दम नहीं भरते

होय योग निद्रा लीन पै जागत हो जग़ उज्यारे ॥

अपने अपने मत मार्ग सों सभी तुम्हें हैं ध्याये

जैसे नदियां सिंधु समावत त्यों सब तुझ में समाये

सब के तुम विश्राम भवन हो सकल विश्व आधारे ॥

जग जंजालों की खींचतान में जिसका जीउ है हारा  
सति संग कृपा से चरण बंदि तेरा इक बार नाम उचारा  
अवरल भक्ति दान दे तिनको भव बंधन से उबारे ॥

क्यों ज्ञान से गिरता है जो भक्त तेरे उर नहीं  
मोक्ष सी पदवी पाकर भी गिरते नरकनि माहीं  
इहां उहां भए निर्भय हैं वे जो तेरी शरण पुकारे ॥

ध्वजा अंकुश और कमल रेखा युत तेरे चरण मनोहर  
भव बोहित सम जानि तिन्हे लई ओट है रघुवर  
से भए तरण तारण जग पावन सुर मुनि तिन्हे जुहारे ॥

भक्ति कल्पतरु कथा डार पै शुक पिक रूप बनाए  
बैठि रसिक जन संत सनेही प्रेम अमिय फल खाए  
जग भुलाय हो मगनु रैन दिन गावत गुणनि तुम्हारे ॥

गहिबर बन ज्यों हृदय तुम्हारा अजित जीतने वाले  
केवल स्मरण से पतितों के पाप भस्म करने वाले  
नित्य भजन रति तिन को तुम हो करते प्रेम अपारे ॥

हे अनंत तेरे गुण अनन्त को गा गा शारद हारी  
मन वाणी की पहुंच से बाहर तेरी कीरति न्यारी  
तप्त जीवों की कलि मल काटे तेरे चरण उदारे ॥

अखण्ड तेज सों जग मग झलके सत्य कीरति की जोती  
कोटिनि रवि शशि प्रभा जासु उदय अस्त है होती  
महा विराट भी अंश तुम्हारा ऐसे वेद उचारे ॥

बोली अहिलिया हे करुणा सिंधु मैं हूं पापिनि भारी  
मुनि सम्बंध से आय प्रभू दे दर्श अधम उधारी  
सब अपराधों की क्षमा याचना करती हूं बारं बार ॥

प्रणत पाल आरत भव मोचन विधि हरि हर के साई  
धर्म धुरंदड़ शील सिंधु प्रभु प्रसन्न रहें सदाई  
चरण शरण हूं दीननि वत्सल शरणा गत सुखकारे ॥

पूरण काम सुख धाम राम हम पति पत्नी जैसे  
उमा ईश आशीश सों तुम भी मिलो प्रिया सों तैसे  
पद्म कल्प मिलि प्रेम महा सुख लहो युगल सरकारे ॥

रिषि बोले लीला समाज के रघुवर तुम हो दाता  
अविचल आनंद देत जनों को परम पुरुष विक्षाता  
मम आशीश तीन लोक तेरी बढ़े कीरति करतारे ॥

पितु आज्ञा हित बन में जाकर चरित अनन्त करेंगे  
सकुल दशनन का करिके वध भूमी भार हरेंगे  
विजय लक्ष्मी प्राप्त कर तुम आवोगे अवध मंझारे ॥

राज तिलक के समय सुहावन आऊं पत्नी साथी  
नैननि को फल तबहीं मिले जब देखूं सीय रघुनाथा  
अब जाय जनकपुर देखो रघुवर मोद विनोद बहारे ॥

रिषि दम्पति की नृमल बानी सुनि हर्षे दोऊ बीरा  
पग वन्दन करि चले मुदित मन दशरथ सुवन सधीरा  
गरीबि श्रीखण्डि कोकिलि बोली अब मिथिला पग धारे ॥